News Expert
15h ·

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक प्रसार/ समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40 :50: 50 :10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बड़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है। यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है। इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है।तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन इस प्रकार करें, जानिए

RIO NEWS24 14 hours ago कृषि, समाचार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार/ समन्वयक डॉक्टर ए. के. सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसानों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूछम पोषक तत्व 40 : 50: 50 : 10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बढ़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है।

डॉक्टर सिंह ने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है।यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है। इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसानों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रायपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।

दैनिक जागरण कानपुर 08/12/2021

पपीते के खेत में बनाएं पर्याप्त नमी

कानपुर : सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें, क्योंकि पौधों की बढ़वार काफी होती है और फलों की वृद्धि भी तेजी से होती है। हालांकि ज्यादा पानी लगाने से पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी की आशंका होती है। यह जानकारी चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के निदेशक प्रसार डा. एके सिंह ने दी। उद्यान विज्ञानी डा. अनिल कुमार ने बताया कि गलन की बीमारी से बचाव के लिए कापर आक्सी क्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के पास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। उन्होंने बताया कि फलों को रसायनों से नहीं पकाना चाहिए। जासं

Sign in to edit and save changes to this file.

वर्ष : 6, अंक : 239 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, बुधवार
08 दिसम्बर, 2021
मूल्य ₹ 3.00

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक

www.shashwattimes.com

योगी सरकार अब इन छात्रों को भी देगी छात्रवृत्ति और छात्रावास की सुविधा...6

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक प्रसार समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40 ऱ50ऱ 50 ऱ10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बढ़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है।तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

लखनऊ संस्करण
वर्ष-06, अंक -46
बुधवार, 08 दिसंबर 2021
पृष्ठ-12
मूल्य-3 रुपये

Azadi Ka Amrit Mahotsav

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

दैनिक भास्कर

For epaper : www.dainikbhaskarup.com

सर्दियों में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें : डॉ. अनिल

भास्कर ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के निदेशक प्रसार/ समन्वयक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40 –50– 50 –10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉ. सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बढ़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु

आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है।यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है। इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है।

Sign in to edit and save changes to this file.

हिन्दी दैनिक समाचार

विशाल प्रदेश

RNI No. UPHIN/2007/23059

प्रधान सम्पादक- मोहम्मद नासिर

कानपुर का लोकप्रिय समाचार पत्र

वर्ष : 15 | अंक : 303 | बुधवार 08 दिसम्बर 2021 | पृष्ठ : 6 | मूल्य : 1.00

सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें : डॉ. अनिल

कानपुर(विशाल प्रदेश)सीएसए के निदेशक प्रसार,समन्वयक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40 :50: 50 :10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें उद्यान वैज्ञानिक डॉ. सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बड़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है डॉक्टर सिंह ने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है यदि

रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है।